Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 114 - 116**

गाँधी जी के सर्वोदय का नीतिशास्त्रीय एवं अध्यात्मिक आधार

डा० हरीश कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास
रामस्वरूप ग्रामोद्योग. परास्नातक महाविद्यालय,
पुखरायर्यो कानपुर देहात
harishcsjmu09@gmail.com

Abstract

"महात्मा गांधी का सर्वोदय सिद्धांत केवल एक सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि यह एक गहन नीतिशास्त्रीय (Ethical) एवं अध्यात्मिक (Spiritual) दर्शन पर आधारित समग्र जीवन दृष्टि है। "सर्वोदय" का शाब्दिक अर्थ है—सभी का उदय या सभी का कल्याण। यह विचार गांधी जी ने रूसी लेखक टॉल्स्टॉय तथा जॉन रस्किन की पुस्तक "अन टु दि लास्ट" से प्रेरित होकर विकसित किया, किन्तु इसमें भारतीय आध्यात्मिक परंपरा विशेषतः भगवद्गीता, उपनिषद, जैन और बौद्ध दर्शन का गहन प्रभाव विद्यमान है।नीतिशास्त्र के दृष्टिकोण से गांधीजी का सर्वोदय अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा आत्म-शुद्धि जैसे मूल्यों पर आधारित है। गांधीजी के अनुसार, व्यक्ति का नैतिक उत्थान सामाजिक कल्याण का आधार है। उनके लिए नैतिकता केवल व्यक्तिगत आचरण की बात नहीं थी, बल्कि राजनीति, अर्थशास्त्र और समाज की हर व्यवस्था में नैतिक मूल्यों की स्थापना आवश्यक थी। सत्य और अहिंसा उनके सर्वोदय दर्शन के मूल स्तंभ हैं, जो व्यक्ति और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होते हैं।अध्यात्मिक दृष्टि से गांधीजी का सर्वोदय आत्मा की शुद्धता, ईश्वर के प्रति समर्पण और आत्मानुशासन पर आधारित है। वे मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का अंश है, अतः हर व्यक्ति का कल्याण ही ईश्वर-सेवा है। यह सेवा बिना भेदभाव, जाति, वर्ग या धर्म के होनी चाहिए। गांधीजी के सर्वोदय में 'दार्शनिक अहिंसा' केवल हिंसा से बचाव नहीं, बल्कि करुणा, सह-अस्तित्व और सबके प्रति समान दृष्टिकोण का व्यवहारिक रूप है।गांधीजी का सर्वोदय केवल एक सामाजिक क्रांति नहीं, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक जागरण है, जिसमें व्यक्ति के अंतःकरण का उत्थान ही समाज और राष्ट्र की प्रगति का मूल है। उनके विचार आज के भौतिकतावादी युग में मानवीय मूल्यों और आत्मिक संतुलन की पुनर्स्थापना के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस प्रकार, गांधीजी का सर्वोदय नीतिशास्त्र और अध्यात्म का संगम है, जो सम्यक् समाज के निर्माण की दिशा में एक स्थायी मार्गदर्शक सिद्धांत प्रस्तुत करता है।"

भारत के प्रत्येक सम्यक दृष्टि से सोचने वाले नागरिक के लिए अब समय आ गया है कि वह देश को उन समस्याओं से बचाए जो उसे घेरे हुए है। ओर विश्व के सामने भारत की एक साफ-सुथरी छवि प्रस्तुत करें। दुर्भाग्य यह है कि प्रतिदिन देश में कुछ नकारात्मक घटता ही रहता है। जो देश की छवि को धूमिल कर रहा है इस सन्दर्भ में आश्चर्य यह होता है कि गांधी ने अपने देश के लिए क्या सोचा था हम प्रतिदिन अमानवीय गतिविधियों द्वारा पृथ्वी पर कंलक लगने की घटनाए पढ़ते रहते है चाहे वह घृणित तत्वों द्वारा विध्वंसक गतिविधियाँ हो चाहे सत्ता के अनियंत्रित क्रूर हाथों के द्वारा शोषण या भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्तियों के अनियंत्रित कार्य हो, इन सब नकारात्मक शक्तियों ने कर्तव्यनिष्ठ और सिद्धान्तप्रिय लोगों को बाध्य कर दिया है कि वे इन समस्याओं का समाधान ढूंढे। गाँधी जी का सर्वोदय वर्तमान समस्याओं के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक है गांधी का पहला लेख इण्डियन ओपीनियन में 4 जून 1903 को छपा जिसमें उन्होने भारतीय श्रमिकों की दुर्दशा का आलोचनात्मक विश्लेषण किया है गांधी के अनुसार आत्म- अनुशासन ऐसा महान गुण है जिसे हममें से प्रत्येक को आत्मसात करना चाहिए भारत में उन्होंने 'यंग इण्डिया' नवजीवन और हरिजन जैसे पत्रिकाओ के माध्यम से समाजिक बुराइयो के उन्मूलन का प्रयास किया। वे अपने सम्पूर्ण जीवन में सत्य के साथ प्रयोग कर रहे थे। इस प्रकार से उनके कुछ बुनियादी अवधारणाओं जैसे सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और स्वराज पर उनके विचार वास्तव में मार्ग दिखाने वाले है पथप्रर्दशक है। गांधी की महानता उनके नैतिक व राजनीतिक कार्य की विशिष्ट तकनीक में समाहित है। स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार की तकनीको को उनकी सर्वोदय अवधारणा में ढूँढा जा सकता है। गांधी के सर्वोदय की अवधारण आध्यात्मिक और नीतिशास्त्रीय सिद्धान्तों पर आधारित है। किसी मूल्य पद्धति के लिए पहली आवश्यकता सत्तामीमांसा होती है। यह उपनिशदीय2_सत्तामीमांसा है जो सर्वोदय के नीतिशास्त्र का आधार बनाती है। यह व्यक्ति की प्रकृति मूलभूत वास्तविकता की प्रकृति वे मूल्य जो राजनैतिक ढाँचे का और सर्वोदय के सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम की प्रकृति का निर्धारण करते है से जुड़ी है। एक नैतिकवादी होने के नाते गांधी ने उन सभी अमानवीय व्यवहारों की खुले रूप से आलोचना की है जो नैतिकता के नाम पर की जा रही थी। गांधी को यह अनुभूति हो गई थी कि बिना नैतिक सम्पूर्णता के सामाजिक प्रगति संभव नहीं है सर्वोदय दर्शन का आधार स्तम्भ नीतिशास्त्र है।[1]उनके विचार में जिस प्रकार से मानवीय समाज का अध्ययन किए बिना नीतिशास्त्र का अध्ययन अपर्याप्त है, उसी तरह से नीतिशास्त्र को सामाजिक दर्शन का एक स्वतंत्र भाग नहीं माना जा सकता है। गांधी का विश्वास है कि मानवता का अहिंसा की ओर धीरे-धीरे परन्तु अवश्यंभावी विकास हो रहा है। नैतिकता मानवीय गतिविधियों के सभी पक्षों पर लागू होती है। आर्थिक जीवन सामाजिक सम्बन्धों राजनीति व शिक्षा वह नैतिक मापदंड जो पूरी तरह से सैद्धान्तिक है और जिसका कोई व्यावहारिक उद्देश्य नहीं है। वह महत्वहीन है। सर्वोदय आध्यात्मिक आदर्शवाद के आधार पर राजनीतिक व सामाजिक पुनर्निमाण की योजना का निर्माण करने का एक बौद्धिक प्रयास है।[2]गांधी का ईश्वर में जीवंत व अटूट विश्वास था उनके राजनीतिक दर्शन का केन्द्र बिन्दु पदार्थ के ऊपर आत्मा को प्राथमिकता देना है। गांधी का ईश्वर में पूरा विश्वास है और एक सच्चे सत्याग्राही के लिए ऐसा विश्वास अपरिहार्य है। जब तक व्यक्ति का ईश्वर में जीवंत विश्वास नहीं है। वह अपने उद्देश्य तक नहीं पहुंच सकता है। "हम अच्छा बनने के लिए इस लिए करते है कि हम ईश्वर को प्राप्त करना चाहते है।[3]गांधी जी का ईश्वर में पूर्ण विश्वास था उनका कहना है "अगर एक व्यक्ति को आध्यात्मिक लाभ मिलता है तो उसके साथ सारी दुनिया का लाभ होता है और अगर एक आदमी का पतन होता है तो उस सीमा तक सारी दुनिया का पतन होता है।[4]धर्म को नैतिकता के साथ जोडने का गांधी का उद्देश्य यह है कि मानवीय जीवन में धर्म एक सक्रिय भूमिका निभाए गांधी कभी भी पाखंडो और रूढ़ियों से प्रभावित नहीं हुए।3-- उनके अनुसार धर्म की सबसे बड़ी चुनौती नास्तिकों की ओर से नहीं बल्कि पाखण्डी व बोगियों की वजह से आई है। धर्म तब शक्तिशाली बनेगा जब इसमें आत्म शुद्धिकरण के लिए साहस और ईमानदारी होगी सर्वोदय विचारको का मानना है कि मनुष्य आवश्यक तौर पर दैवीय है और मूलभूत रूप से भला है। इसलिए व्यक्तियों के बीच हित में टकराव का कोई कारण नहीं है। चूंकि मानव प्रकृति में भलाई और सुधार की योग्यता एक स्वाभाविक व सार्वभौम पक्ष है, इसलिए आपस में संघर्ष नहीं होता है। सब मानव प्राणी में दैवीय अंश है इसलिए आत्म- साक्षातकार का अर्थ है सब का आत्म साक्षातकार। इसके बावजूद अगर मानव जाति में संघर्ष होता है तब इसका कारण त्रुटिपूर्ण शिक्षा या मूल्यों की झूठी समझ जैसे निजी स्वामित्व के मूल्य का होना है। सर्वोदय आदर्श सब मानव जाति के बहुमुखी विकास का समर्थन करता है। सर्वोदय के लिए मानव होना ही आध्यात्कि उत्थान के लिए वास्तविक शिक्षा है। यह विभिन्न विश्वासों से जुड़े सब लोगों को समान आध्यात्मिक अधिकारों और अवसरों को प्रदान करती है। इसका उद्देश्य जीवन के सब क्षेत्रों में सत्य व अहिंसा की अनुभूति करना है।[5]तपस्याः सत्य के लिए साधना और प्रतिबद्धता मानव अस्तित्व को न्याय संगत ठहराता है। यह सत्य आत्म-प्रेम को आत्म-त्याग में परिवर्तित कर देता है। चूंकि सत्य केवल एक है। जो पूरे संसार पर छाया हुआ है। इसलिए वास्तविक आनन्द त्याग में है। चूंकि प्रत्येक वस्तु ईश्वर की ही अभिव्यक्ति है। इसलिए व्यक्ति की सेवा करना ईश्वर की सेवा करना बन जाता है। मैं और मेरा की भावना से आत्म-प्रेम उत्पन्न होता है। इस भावना से अहंवाद घमण्ड अस्वस्थ प्रतियोगिता और परिग्रहवृत्ति बढ़ती है। इसलिए गांधी ने तपस्या या प्रायश्चित के मार्ग बताये है। जिसे अपनाकर व्यक्ति निराधार प्रवृत्तियों से ऊपर उठ जाता है।[6]सत्यः- गांधी के विचार में सत्य की अवधारणा मौलिक है। गांधी सत्य की अवधारणा तक किसी दार्शनिक तर्क या आध्यात्मिक अनुमान द्वारा नहीं पहुंचते है, और जीवन के जिस रूप में सत्य का प्रयोग किया जाता है। उसी ढंग से गांधी को इस सत्य का अर्थ दृष्टिगोचर हुआ हैं। गांधी ने सत्य व वास्तविकता की समाकृतिकता को स्वीकार किया है। गांधी के लिए सत्य के अतिरिक्त कुछ नहीं है या

किसी का भी अस्तित्व नहीं है। सत्य के नियमों में न4- केवल सत्य बोलना ही शामिल है, बल्कि इसका व्यापक अर्थ है। यह जीवन के सब रूपों की ओर इशारा करता है। सत्य की खोज सब की सेवा के द्वारा ही संभव है।[7]

अहिंसाः सत्य के बिना कोई प्रेम नहीं है। सामाजिक जीवन में प्रेम की पहली अभिव्यक्ति अहिंसा है। गांधी का मानना है कि उन्होंने सत्य की अपनी खोज में अहिंसा को प्राप्त किया है। गांधी के अनुसार अहिंसा सामाजिक गतिशीलता की ऊर्जावान शक्ति है। अगर अहिंसा को शक्तिशाली बनाना है। तो इसे मस्तिष्क से प्रारम्भ होना चाहिए। मात्र शरीर की अहिंसा जिसका मस्तिष्क से सहयोग नहीं है वह दुर्बल या कायर की अहिंसा है और इसलिए उसमें कोई बल नहीं है। इसलिए अगर हम प्रेम उत्पन्न नहीं कर सकते है तो कम से कम यह तो आवश्यक है कि घृणा को बढ़ावा न दे।[8]साध्य व साधनः- मानव प्रकृति में नैतिकता विद्यमान रहती है। इसलिए गांधी ने मिश्रित मूल्यों का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। गांधी जी ने साधन एवं साध्य की पवित्रता पर बल दिया गांधी जी ने लिखा की उचित साधनो से उचित साध्य प्राप्त किया जा सकता है। साध्य व साधन एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए है। साधन बीज है और साध्य पेंड़ है। इसलिए जितना सम्बन्ध बीज और पेड के बीच है। उतना ही सम्बन्ध साधन और साध्य के बीच है जैसा हम बोते है वैसा ही पाते है।[9]गांधी ने साध्य व साधन को एक निरंतर प्रक्रिया माना है गांधी का सर्वोदय समाज व्यवस्था को एक साधन के रूप में आध्यात्मिक स्वतत्रता प्राप्ति के लिए प्रयोग करने का प्रयास किया है। यह सर्वोदय समाज व्यवस्था प्रत्येक व्यक्ति के लिए नैतिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करती है। चूंकि इस स्वतंत्रता का नैतिक आध्यात्मिक आधार है। इसलिए इस स्वतंत्रता को नैतिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के समान माना जा सकता है। इस प्रकार से गांधीवादी विचार में साध्य व साधन की समस्या एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण के रूप में विशेष स्थिति रखती है। और यह दृष्टिकोण सर्वोदय नैतिक स्वतंत्रता आध्यात्मिक स्वतंत्रता राजनीतिक स्वतंत्रता और आर्थिक स्वतंत्रता में योगदान देता है।[10]

5_इस प्रकार हम देखते है कि गांधी जी के सर्वोदय का सिद्धान्त नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार से गहरे जुडा है। और समपूर्ण जीवन गांधी जी ने मानवता के सामाजिक अधिकारों की लडाई लड़ते रहे वे कभी अपने विचारो को सिद्धान्त रूप में देने की कोशिश नहीं की वे एक स्वप्नदर्शी एक व्यावहारिक आदर्शवादी और इन सबसे भी उपर एक कर्मयोगी थे। उन्होंने दुनिया को दिखाया कि किस तरह एक शुद्ध इच्छाशक्ति से आदमी किसी भी प्रकार की दासता चाहे वह राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक या नैतिक हो से मुक्ति पा सकता है। सत्य का पालन करने के लिए वे शहादत तक देने की इच्छाशक्ति रखते थे। और इसी ताकत ने उन्हें उस रूप में खड़ा किया जिसे आज हम गर्व और आदर से देखते है।

संदर्भ

1. एम. के. गांधी, हरिजन 1-7-1939

2. एम.के. गांधी, आत्मकथा, नवजीवन, अहमदाबाद, 1948, पृष्ठ 615,

3. एम.के. गांधी, यंग इण्डिया, 4-12-1924

4. एम.के. गांधी, एथिकल रिलीजन, पृष्ठ 49

5. एम.के. गांधी, एथिकल रिलीजन, पृष्ठ 53

6. एम.के. गांधी, यरवदा मन्दिर, पृष्ठ 242

7. जे.पी.नारायण, सामाजवाद से सर्वोदय की ओर पृष्ठ 29

8. एम.के. गांधी, प्रेम का नियम, नवजीवन, अहमदाबाद 1974 पृष्ठ 02

9. एम.के. गांधी, हिन्द स्वराज, नवजीवन पृष्ठ 77

10. एम. के. गांधी, यंग इण्डिया 6-5-1926.

****